''टीचर्स बहिनों के चौथे ग्रुप में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

– गुल्ज़ार दादी

आज आप सब टीचर्स का याद-प्यार लेते हुए बाबा के पास गई तो सदा के मुआफिक बाबा से दूर से मिलन हुआ और अलौकिक दृष्टि लेते दृष्टि में समाते हुए सम्मुख पहुँच गई। बाबा ने अपने हृदय में समा लिया और बहुत शक्तिशाली रूप से मिलन मनाया। कुछ समय तो ऐसा लगा जैसे मैं भी शक्ति स्वरूप के अनुभव में मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति के अनुभव में खो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले मेरी 100 ब्राह्मण से उत्तम कुमारियों का क्या समाचार लाई हो? तब मैं बोली बाबा इस भट्ठी में भी सबके दिल में परिवर्तन-परिवर्तन का ही साज़ बज रहा है। सब बहुत हिम्मत रख रहे है। अब बदलना ही है। बाबा बोले बच्छी अब तो समय और प्रकृति की भी यही पुकार है कि हे परिवर्तन के आधारमूर्त अब को कब नहीं करो। रहम करो, कृपा करो। क्या यह दुःख की पुकार बच्चों को सुनने नहीं आती? हिम्मत तो अच्छी रखी है, लेकिन आगे चलते हिम्मत के साथ उमंग-उत्साह साथ रहे, क्योंकि उमंग-उत्साह ही फरिश्ते स्वरूप के पंख है। जहाँ उमंग-उत्साह है हिम्मत है वहाँ कोई भी समस्या समाधान के रूप में बदल जाती है इसलिए अब एकाग्रता और दृढ़ता की शक्ति से विशेष चारों ओर निर्विघ्न शान्ति का वायुमण्डल फैलाओ। ऐसे कहते बापदादा ने बोला अब इस लास्ट ग्रुप को भी बापदादा वतन का सैर कराते हैं। ऐसा कहना ही था, तो सारा ग्रुप वतन में पहुँच गया और त्रिपल V के रूप में सभी बापदादा से दृष्टि लेने लगे। बाबा भी बहुत स्नेह और शक्ति रूप से सबको दृष्टि दे रहे थे। बाबा बोले बच्ची अब समय है समय और संकल्प को सफल करो और कराओ। एक दो को हिम्मत के पंख लगाते उड़ो और उड़ाते रहना। एक दो को सदा कोई न कोई गुण की गिफ्ट देते रहना और लेते रहना। सदा अपने चार खाते देखते रहना। एक शुभ संकल्प का खाता, दूसरा सेवा का खाता और तीसरा सुख देने का खाता, चौथा दुआओं का खाता। बच्चों ने वायदा किया है, तो जो वायदा करता है उन्होंको वायदे के साथ, बल के साथ फल मिलता है। तो आज बच्चों को भी बल का फल देता हूँ। तो आज बच्चों को वतन के बगीचे में सैर कराता हूँ तो बाबा आगे-आगे चला और हम सब बच्चे पीछे-पीछे चले। सब बहुत खुश हो रहे थे। बाबा भी बीच में खड़ा करके वरदान का हाथ ऐसे करता था तो सब बहुत खुश हो जाते थे। फिर बाबा ने कहा अब बच्चे बगीचे में अपने अपने रुचि से जो फल चाहिए वह खालो। वहाँ के फल वृक्ष में ऐसे नजदीक लटकते है जो अपने हाथ से तोड के खा सकते है। सब बहुत प्यार से खाने लगे। बाबा हम सबको देख बहुत खुश हो रहे थे। उनके बाद बाबा ने सबको बगीचे में ही बिठा दिया और कहा इन बच्चों को सौगात क्या देंगे। बस इतने में सौगात इमर्ज हो गई। तो सौगात क्या थी? बहुत बड़ा फ्रेम था जिसमें ऊपर शिव बाबा और नीचे ब्रह्मा बाबा हीरे का बना हुआ था जो बड़े चमक रहे थे। बाबा बोले एक-एक बच्चे को बाबा अपने हाथ से सौगात देंगे। तो एक-एक बच्चा बाबा के पास आते थे, बाबा सबको अपने बाहों में समाये चित्र देता जाता था और सब बहुत हर्षित हो रहे थे। उसके बाद बाबा ने सबको बहुत पावरफुल दृष्टि दी और सबको दृष्टि में समाते सबको साकार वतन में भेज दिया। मैं भी दृष्टि में समाते साकार वतन में पहुँच गई। ओम् शान्ति।